>

Title: Need for making adequate payment to the farmers for their agricultural produce in the country.

श्री प्रतापराव गणपतराव जाधव (बुलढाणा) : भारत के कृषि प्रधान देश में किसानों की आत्महत्या घोर चिंता का विषय है। भारत में आज भी 70 प्रतिशत से ज्यादा लोग खेतीबाड़ी कर अपने परिवार का लालन पालन कर रहे हैं। भारत के किसानों की दयनीय हालत आजादी के बाद भीषण रूप से गंभीर हो गई है। आज के किसानों पर कर्जा इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि उनको कृषि करने के लिए बीज, खाद एवं सिंचाई के साधन महंगे मिल रहे हैं और किसानों को उनकी उपज का वाजिब दाम नहीं मिल रहा है। किसानों को हर साल सूखे, बाढ़ एवं जंगली जानवरों से फसल का बड़ी मात्रा में नुकसान उठाना पड़ रहा है। अपनी दयनीय हालत और गरीबी के कारण देश में हर आधे घंटे में किसान आत्महत्या कर रहा है। रोजाना 47 किसान आत्महत्या कर रहे हैं। केवल 2009 में 17,368 किसानों ने आत्महत्या की एवं मेरी जानकारी में हैंकि 2010 में 16000 किसानों ने आत्महत्या की। किसानों की समस्याओं का समाधान करने में महीनों लग जाते हैं और उद्योगपतियों की समस्याओं को कुछ क्षणों में दूर कर दिया जाता है। कुछ महीने पूर्व देश के अमीरों को कार खरीदने के लिए 7 प्रतिशत ब्याज पर कर्जा देते हैं और किसानों को 9 से 12 प्रतिशत का कर्जा दिया जाता है। क्या यह किसानों के हित में है ? सरकार द्वारा 55000 करोड़ से 60000 करोड़ के कर्ज अमीरों के माफ किये जाते हैं और जब किसानों के 10 हजार रूपये के माफ करने की बात आती है, तो हाय तौबा मच जाती है।

सरकार से अनुरोध है करना चाहता हूं कि अमीर एवं किसानों के बीच सुविधा दिये जाने के बारे में जो पक्षपात किया जाता है उसे रोका जाये और किसानों को उनकी मेहनत का पूरा फल मिले जिससे ये अपने कर्ज उतार सकें और विकास की धारा में शामिल हो सकें।